संस्थान समाचार

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी) संस्था और उसके केंद्रों की समाचार पत्रिका

■ प्रकाशन : वर्ष : 11 ■ अंक : 73 ■ सितम्बर 2025

अध्यापक शिक्षा विभाग

शैक्षणिक सत्र 2025-26 का सत्रांरभ

केंद्रीय हिंदी संस्थान के अटल बिहारी वाजपेयी अंतरराष्ट्रीय सभागार में अध्यापक शिक्षा विभाग के शैक्षिक सत्र 2025-26 का सत्रांरभ कार्यक्रम दिनांक 12 सितंबर, 2025 को आयोजित किया गया। संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में सहकार भारती के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री संजय पाचपोर ने हिस्सा लिया जबकि मुख्य अतिथि के तौर पर नीपा की कुलपति प्रो. शशिकला वंजारी उपस्थित रहीं।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए विशिष्ट अतिथि श्री पाचपोर ने कहा कि पूरा जीवन लगायेंगे तो भी भारत की सुंदरता, यहाँ का व्यंजन, पहनावा पूरा नहीं हो सकता क्योंकि भारत की संस्कृति अपार है। उन्होंने डॉ. भीमराव अंबेड़कर के संघर्षो को याद करते हुए बताया कि बाबा साहेब 24 घंटे में से 18 घंटे अध्ययन करते थे। हमें उनके जीवन से सीखने की आवश्यकता है। उन्होंने अध्यापक शिक्षा विभाग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों से आंबेडकर जी की जीवनी पढ़ने की बात कहते हुए कहा कि शिक्षक देश का भविष्य बदल सकता हैं, अतः शिक्षण प्रशिक्षण के पाठ्यक्रम में कर्तव्यों एवं उत्तरदायित्वों को समझने की आवश्यकता है।

मुख्य अतिथि प्रो. शशिकला वंजारी कुलपति, राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान, (नीपा) मानद विश्वविद्यालय, नई दिल्ली ने अपने उद्बोधन में श्री अरविंदो के कथन 'भारत के स्वभाव के अनुसार शिक्षा होनी चाहिए' के माध्यम से कहा कि 34 साल के बाद जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति आई है उसका प्रभाव 2047 में देखने को मिलेगा जब भारत एक वैश्विक ज्ञान केंद्र बनेगा। आने वाले 50 सालों में हम ओल्ड कंट्री नहीं वरन तरूण रहेंगे। इसकी जिम्मेदारी हम शिक्षकों और भावी शिक्षकों पर है। अतः हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति को समझना पड़ेगा। शिक्षा नीति 2020 एक ऐसा दस्तावेज है जो विकसित भारत होने का सपना साकार करेगा।

इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी, द्वारा अध्यापक शिक्षा विभाग के समस्त शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को शपथ दिलाई गई। तत्पश्चात् उन्होंने अपने

शेष पृष्ठ 7 पर

हिंदी दिवस पर शिक्षा मंत्री का संदेश

राष्ट्रीय चेतना की भाषा है हिंदी

हिंदी हमारी संस्कृति की पहचान है तथा राष्ट्रीय चेतना की भाषा है। हिंदी भाषा के प्रति सम्मान को बनाए रखना तथा इसका कार्यालय में अधिक से अधिक प्रयोग करना हमारा संवैधानिक दायित्व है। सरकार और जन साधारण के बीच संपर्क, संवाद और संप्रेषण के माध्यम के रूप में निःसंदेह हिंदी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रही है।

स्वयं माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा विश्व के अनेक मंचों पर व सम्मेलनों में हिंदी में अपना उद्बोधन देना, विचारों एवं मंतव्यों को व्यक्त करना इस बात का प्रमाण है कि सरकार इसके प्रयोग को निरंतर बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है।

हिंदी दिवस के इस पावन अवसर पर हम यह संकल्प लें कि हम सभी गर्व और उत्साह से अपना दैनिक कार्यालयीन कार्य हिंदी में करेंगे और राजभाषा संबंधी प्रावधानों का अनुपालन सुनिश्चित करेंगे।

मुझे विश्वास है कि हम सामूहिक प्रयासों से शिक्षा मंत्रालय एवं इसके प्रशासनिक नियंत्रणाधीन संस्थानों, निकायों, विश्वविद्यालयों आदि में राजभाषा संबंधी लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल होंगे।

'हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं का अंतरसंबंध'

केंद्रीय हिंदी संस्थान के दिल्ली क्षेत्रीय केंद्र द्वारा हिंदी दिवस 14 सितम्बर 2025 के अवसर पर हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं का अंतरसंबंध विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र विमर्श सत्र तथा समापन सत्र में समाहित संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल आगरा के उपाध्यक्ष प्रो. सुरेन्द्र दुबे ने की। स्वागत वक्तव्य संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी द्वारा दिया गया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली के कुलपति प्रो. मजहर आसिफ, विशिष्ट अतिथि साहित्य अकादमी, दिल्ली के सचिव डॉ. के. श्री निवास राव तथा दिल्ली केंद्र की क्षेत्रीय निदेशक प्रो. अपर्णा

सारस्वत उपस्थित रही। द्वीप प्रज्ज्वलन तथा औपचारिक स्वागत सत्कार के पश्चात् उद्घाटन वक्तव्य देते हुए संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने कार्यक्रम के आयोजन की महत्ता तथा एक भारतीय भाषा कैसे दूसरी भाषा से जुड़ती है इस पर संक्षिप्त सारगर्भित प्रकाश डाला। विशिष्ट अतिथि साहित्य अकादमी के सचिव डॉ. के. श्री निवास राव ने व्याकरणिक दृष्टि से भारत की सभी भाषाओं को एक जैसा बताते हुए कहा कि भाषा जोड़ने का कार्य करती है। वहीं मुख्य अतिथि के रूप में जामिया मिलिया के कुलपति प्रो. मजहर आसिफ ने भाषा का संबंध माता के दूध से जोड़ते हुए कहा कि संस्कार और भाषा दोनों माँ से ही मिलता है। उन्होंने मातृभाषा की वकालत करते हुए कहा कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में माध्यम के रूप में मातृभाषा को केंद्र में रखा गया है। इस मौके पर दिल्ली केंद्र की क्षेत्रीय केंद्र की निदेशक प्रो. अपर्णा सारस्वत ने भारत सरकार के शिक्षा मंत्री द्वारा हिंदी दिवस पर दिए गए संदेश का वचन किया।

हिंदी दिवस पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्रो. सुरेन्द्र दुबे ने कहा कि भाषा पानी की तरह होती है। जिस तरह पानी का स्वाद बदलने के बावजूद उसके गुण, धर्म कोई परिवर्तन नहीं होता ठीक वैसा ही भाषा के साथ होता है। प्रो. दुबे ने भारत की प्राचीनता तथा उसकी संस्कृति पर पर प्रकाश डालते हुए आर्य आगमन के सिद्धांत को निराधार बताते हुए कहा कि भाषा जोड़ने का काम करती है। भाषा को धर्म और मजहब से जोड़ा जाना भाषा के विकास के लिए बड़ा अवरोधक होता है। कार्यक्रम का संचालन सहायक आचार्य डॉ. के. के. पाण्डेय तथा धन्यवाद ज्ञापन सहायक आचार्य डॉ. शोभनीम कुमारी ने किया।

शिक्षक दिवस पर कार्यक्रम आयोजित

शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर अध्यापक शिक्षा विभाग द्वारा शिक्षक दिवस समारोह का आयोजन संस्थान के अटल बिहारी वाजपेयी अंतरराष्ट्रीय सभागार में किया गया।

कार्यक्रम की शुरूआत डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के चित्र पर माल्यार्पण के साथ हुई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. हरिशंकर शैक्षिक समन्वयक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. चंद्रकांत कोठे, विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा विभाग ने की। शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य पर संस्थान के सभी अध्यापकों का तिलक द्वारा स्वागत किया गया।

कार्यक्रम के दौरान प्रो. हरिशंकर तथा प्रो. कोठे सहित छात्रों ने अपने विचार रखे। मनोरंजन के लिए सभी शिक्षकों को सृजनात्मक टैग दिया गया जैसे- स्वीट एंडमाइन्डफुल टीचर, इंस्पेक्टर टीचर, मोटिवैशनल टीचर आदि।

कालजयी साहित्य पढ़ने से बढ़ता है शब्द-भंडार : निदेशक

केंद्रीय हिंदी संस्थान के अटल बिहारी वाजपेयी अंतरराष्ट्रीय सभागार में अध्यापक शिक्षा विभाग द्वारा हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह का भव्य आयोजन किया गया।

इस अवसर पर अध्यापक शिक्षा विभाग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों तथा अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग के विद्यार्थियों ने प्रतिक्रिया व्यक्त की। प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि भाषा पर अधिकार प्राप्त करने के लिए शब्द भंडार का होना जरूरी है और शब्द भंडार के लिए स्तरीय कालजयी साहित्य को पढ़ने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि हिंदी को कभी राजभाषा का सम्मान नहीं मिला, हिंदी अपने बलबूते पर विकसित होती रही है।

हिंदी आज विश्व तकनीकी, व्यापार, वाणिज्य, इंजीनियर, चिकित्सा और विश्वबाजार की भाषा बन चुकी है। प्रो. चंद्रकांत कोठे ने अपने संबोधन में कहा कि कार्यक्रम का उद्देश्य हिंदी के महत्व को समझना है। हिंदी को न्याय विज्ञान, तकनीकी एवं चिकित्सा की भाषा बनाना

हिंदी पखवाड़ा कार्यक्रम

है। इस हेतु आवश्यक अधिगम-अध्यापन सामग्री के निर्माण में सभी हितधारकों को योगदान देना है।

इस अवसर पर उन्होंने हिंदी पखवाड़ा के उपलक्ष्य में आयोजित विभिन्न साहित्यिक प्रतियोगिताओं के परिणाम घोषित हुए। डॉ. जोगेन्द्र सिंह मीणा विभागाध्यक्ष, अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभागा ने शुभकामनाएँ दी तथा विभागीय हिंदी प्रतियोगिता के परिणामों की घोषणा की।

डॉ. अंकुश तुलसीराम औंधकर कुलसचिव, ने अपने संबोधन में राष्ट्रीय शिक्षा नीति में हिंदी से संबंधित प्रावधानों का अनुप्रयोग करने की बात कही। प्रो. हरि शंकर शैक्षिक समन्वयक, ने शिक्षाप्रद कहानी के माध्यम से सभी को हिंदी में काम करने के लिए प्रेरित किया और हिंदी शिक्षकों को अपने उत्तरदायित्वों को याद दिलाते हुए उनके प्रति सजग रहने की बात कही। मंच संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन कार्यक्रम की संयोजिका डॉ. सरोज राय ने किया।

निबंध लेखन में फातिमा जमीमा अव्वल

दिनांक 18.09.2025 को अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग में विदेशी विद्यार्थियों (सत्र 2025-26) के मध्य पोस्टर प्रतियोगिता एवं निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन सामूहिक रूप से तथा निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन कनिष्ठ एवं वरिष्ठ वर्गों में किया गया। प्रथम पुरस्कार, नतारिया, चडारत, नरीरत, (थाईलैंड), द्वितीय पुरस्कार, होंग हुंग क्युनह (वियतनाम), तृतीय पुरस्कार पनीता, पनीथन, सुचारी, नेतीचन, सुवनान, (थाईलैंड), तृतीय पुरस्कार कनिकी देविंदी, हशिनी जनीली, (श्रीलंका), सांत्वना पुरस्कार तेन्नावकून मलीशा प्रमूक्तेती, श्रीलंका, अमीरबेक अस्कारोव, महलीओ, (उज्बेकिस्तान) एवं निबंध लेखन प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार, फातिमा जमीमा, (श्रीलंका), द्वितीय पुरस्कार, कौषाणि विहारा, (श्रीलंका), तृतीय पुरस्कार बिबिगुल, (क़ज़ाखस्तान), सांत्वना पुरस्कार पतखुल्लाएवा महलियो, (उज्बेकिस्तान), सांत्वना पुरस्कार, मलीषा प्रमुक्ती तेंनकोन, (श्रीलंका) ने प्राप्त किया।

कार्यशाला

भूटिया लोक साहित्य' की सामग्री चयन, संकलन करने हेतु द्वितीय कार्यशाला दिनांक 02.09.2025 से 04.09.2025 तक अपने कार्यक्षेत्र भूटिया समुदाय संस्था गांतोक (सिक्किम) में विद्वानों/विशेषज्ञों के साथ आयोजित की गई। इस कार्यशाला में डॉ. चुकी भूटिया, सहायक प्राध्यापक, सिक्किम विश्वविद्यालय, बोझोगारी पूर्व सिक्किम, श्री भाईचुंग भूटिया, ए.टी.बी.ओ, भाषा प्रशाखा, शिक्षा विभाग, सिक्किम सरकार, गांतोक, डॉ. नामडोल, भूटिया, सहायक प्राध्यापक, तादोंग कॉलेज, सिक्किम सरकार, गांतोक, डॉ. छुकी लेप्चा, समन्वयक हिंदी, डॉ. सोनाम ऑगम् भूटिया, हिंदी पी.जी.टी., भाषाएँ, शिक्षा विभाग, श्रीमती शोभा शर्मा, डी.ई.ओ. (टेक्निकल एसिस्टेंट) भाषा प्रशाखा, शिक्षा विभाग विशेषज्ञों ने भाग लिया।

साहित्यिक सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का आयोजन

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के अटल बिहारी वाजपेयी अंतरराष्ट्रीय सभागार में अध्यापक शिक्षा विभाग द्वारा हिंदी पखवाड़े के उपलक्ष्य में कई प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 17.09.2025 को किया गया। इस प्रतियोगिता में वरिष्ठवर्ग से 34 शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया, जिसका विषय 'डिजिटल युग में हिंदी का विकास' था तथा कनिष्ठ वर्ग से 14 शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया, जिसका विषय 'हिंदी तथा रोजगार के अवसर' था। इस प्रतियोगिता के निर्णायक मण्डल में डॉ. शमा तथा डॉ. सुनीता शर्मा थी। द्वितीय प्रतियोगिता 'हिंदी पोस्टर' का आयोजन दिनांक 17.09. 2025 को किया गया जिसमें वरिष्ठ वर्ग से 22 तथा कनिष्ठ वर्ग से 17 शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल में डॉ. परमान सिंह थे तृतीय प्रतियोगिता 'स्वरचित हिंदी कविता पाठ' का आयोजन दिनांक 18.09.2025 को किया गया जिसमें वरिष्ठ वर्ग से 17 तथा कनिष्ठ वर्ग से 14 शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया।

इस प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल में डॉ. मीनाक्षी दुबे तथा डॉ. सुनीता शर्मा थी।

चतुर्थ प्रतियोगिता 'हिंदी वाद-विवाद' का आयोजन दिनांक 24.09.2025 को किया गया जिसमें वरिष्ठ वर्ग से 12 शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया,इसका विषय 'रोजगार के क्षेत्र में हिंदी बनाम अंग्रेजी' था तथा कनिष्ठ वर्ग से 14 शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया, इसका विषय'सोशल मीडिया हिंदी भाषा के लिए वरदान या अभिशाप' था। इस प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल में डॉ. दीपामणि बरुआ तथा डॉ. तसमीना हुसैन थीं। प्रश्नोत्तरी / क्विज प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 25.09.2025 को किया गया।

प्रतियोगिता में अध्यापक शिक्षा विभाग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के कुल 14 समूहों ने प्रतिभाग किया। इस प्रतियोगिता के निर्णायक के रूप में डॉ. अरिमर्दन त्रिपाठी एवं डॉ. पुरुषोत्तम पाटिल थे।

उक्त सभी प्रतियोगिता कार्यक्रमों की अध्यक्षता अध्यापक शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. चंद्रकांत कोठे ने की।

संप्रेषण के लिए महत्वणपूर्ण है भाषा

मिजोरम हिंदी प्रशिक्षण महाविद्यालय, आईजोल, मिजोरम के पारंगत एवं प्रवीण के 23 प्रशिक्षणार्थियों हेतु 15.09.2025 से 01.10.2025 तक हिंदी भाषा संवर्धनात्मक पाठ्यक्रम का आयोजन नवीकरण एवं भाषा प्रसार विभाग द्वारा किया गया। उद्‌घाटन समारोह शुभारंभ सरस्वती प्रतिमा पर माल्यार्पण तथा दीप प्रज्ज्वलन कर किया गया। मिजोरम से पधारे प्रशिक्षणार्थियों ने संस्थान गीत प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम में पूर्वोत्तर शिक्षण सामग्री विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. मीनाक्षी दुबे, नवीकरण एवं भाषा प्रसार विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. सपना गुप्ता, अनुसंधान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अरिमर्दन त्रिपाठी, मिजोरम हिंदी प्रशिक्षण महाविद्यालय, आईजोल, मिजोरम के सहायक प्राध्यापक डॉ. ए. के. रंजीत उपस्थित रहे। 02 प्रशिक्षणार्थियों ने अभिमत अनुभव साझा किए। मिजोरम से पधारे डॉ. ए. के. रंजीत ने केंद्रीय हिंदी संस्थान की भूरि-भूरि प्रशंसा की। प्रो. सपना गुप्ता ने आगामी 18 दिनों से संबंधित जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम के पश्चात प्रशिक्षणार्थियों का पूर्व-परिक्षण लिया गया और पंजीकरण करवाया गया। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. शिखा माहेश्वरी द्वारा किया गया।

पाठ्यक्रम का समापन समारोह दिनांक 01.10.2025 को केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। उन्होंने मिजोरम से आये प्रशिक्षणार्थियों से कहा कि, प्रत्येक व्यक्ति भावनात्मक स्वरूप से जुड़ा हुआ होता है। उन्होंने कहा कि, सम्प्रेषण, भावों के आदान-प्रदान के लिए भाषा महत्वपूर्ण होती है। उन्होंने भाषा के ज्ञान पर जोर दिया।

मिजोरम हिंदी प्रशिक्षण महाविद्यालय, आइजोल (मिजोरम) से पधारे सहायक प्राध्यापक डॉ. ए. के. रंजीत ने अध्यापकों द्वारा दिए गए प्रशिक्षण की सराहना की एवं आभार व्यक्त किया। दो प्रशिक्षणार्थियों ने अपने अभिमत अनुभव मंच से साझा किए और अन्य प्रशिक्षणार्थियों ने चकमा गीत, मरा गीत, हिंदी गीत प्रस्तुत किए। तत्पश्चात पाठ्यक्रम संयोजिका प्रो. सपना गुप्ता ने अपने वक्तव्य में कहा कि, लेखन की कमियों को सुधारने का प्रयास करें। उन्होंने आगामी सेमेस्टर परीक्षा के लिए भी मार्गदर्शन किया। कार्यक्रम में डॉ. मीनाक्षी दुबे एवं डॉ. अरिमर्दन त्रिपाठी की गरिमामयी उपस्थिति भी रही। अंत में, भविष्य की सुखद कामना करते हुए प्रतिवेदन प्रस्तुत किया तथा परीक्षा में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रशिक्षणार्थियों को पुरस्कृत किया।

कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन नवीकरण एवं भाषा प्रसार विभाग की सहायक प्राध्यापक डॉ. शिखा माहेश्वरी ने किया।

कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ।

हिंदी-कच्छी अध्येता कोश

हिंदी-कच्छी अध्येता कोश निर्माण संबंधी प्रथम कार्यशाला दिनांक 20.09.2025 से 23.09.2025 तक क्रान्ति गुरू श्यामजी कृष्ण वर्मा कच्छ भूज (के.एस. के. वी.) गुजरात में विषय विशेषज्ञों के साथ आयोजित की गई। इस कार्यशाला में प्रो. दीपेद्र सिंह जाडेजा, हिंदी विभाग, बडौदा वि. वि गुजरात (हिंदी विशेषज्ञ), प्रो. कश्मीरा परेश मेहता, अंग्रेजी विभाग, ब्लाक डी के. एस. के. वी विश्वविद्यालय, भुज-कच्छ, गुजरात (कच्छी विशेषज्ञ) प्रो. लालजी मेवाड़ा 'स्वापन', 33 श्री बलराम अर्पामेंट जुबली सर्कल बैंकर्स कॉलोनी भुज, कच्छ, गुजरात (कच्छी विशेषज्ञ), श्रीमती चंदा हीरालाल कोरानी, डुप्लेक्स 1 प्लाट न. 102 वार्ड 8/ए जालाराम गार्डन, सुभाष नगर, गांधीधाम, कच्छ, गुजरात (कच्छी विशेषज्ञ), डॉ. विनोद मालशी कटुवा, प्रभारी, आचार्य दाड़ा, दुध्याल कॉलेज, ऑफ एजुकेशन वार्ड 3/ए मैत्री विद्यालय कैंपस, गुजरात (कच्छी विशेषज्ञ) ने भाग लिया।

संपादकीय

भाषा है बहता नीर

हिंदी दिवस हमारे राष्ट्रीय गौरव और पहचान का प्रतीक है। 14 सितम्बर का यह दिन वर्ष 1949 के उस ऐतिहासिक क्षण का स्मरण कराता है जब भारतीय संविधान सभा ने हिंदी को भारतीय संघ की राजभाषा घोषित किया था। इस अवसर पर केंद्रीय हिंदी संस्थान की अगुवाई में प्रतिवर्ष सहित्यिक सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित होते रहे हैं। इस बार भी संस्थान के सभी केंद्रों पर हिंदी पखवाड़ा के तहत विभिन्न कार्यक्रम हुए। इस क्रम में दिल्ली क्षेत्रीय केंद्र के तत्वावधान में 'हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के अंतर्संबंध' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी हुई जिसमें विद्वानों ने हिंदी को भारत की शक्ति तथा उसकी विविधताओं को एक सूत्र में पिरोने वाली सर्वमान्य भाषा बताया।

हिंदी का रथ अपनी रफ्तार से दौड़ रहा है। हिंदी चाहे तमिल, तेलुगू, मराठी, अवधी, राजस्थानी व अन्य भाषाओं की तुलना में बहुत प्राचीन न हो, उसमें वह शास्त्रीयता न हो, जो पुरातनता के पैमानों पर उसे शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिलाता हो किन्तु उत्तर से दक्षिण और पूरब से पश्चिम तक देश-दुनिया को जोड़ने वाली भाषा के तौर पर हिंदी को जो बढ़त हासिल है वह उत्साहित करने वाली है। इसका महत्व इस बात में है कि हिंदी और दूसरी भाषाओं का अंतर्संबंध प्राकृतों से है। जहाँ तक संस्कृत का प्रश्न है तो द्रविड भाषाओं में संस्कृत की विद्यमानता यह सिद्ध करती है कि भाषायी आधार पर जो आर्य द्रविड टकराव दर्शाया जाता है, वह काल्पनिक है। भारतीय भाषाओं में जिस एकता के बीज संस्कृत ने आरोपित किए, वही सूत्र आज हिंदी के द्वारा वृक्ष रूप में समूचे भारत को जोड़े हुए है।

भाषा या बोली एक बहते हुए जल की धारा के समान होती है, जो जिस मार्ग से गुजरती है, वहाँ की अनेक विशेषताओं और प्रभावों को अपने साथ समेटते हुए आगे बढ़ती जाती है। इस प्रवाह से अनेक उपधाराएँ जन्म लेती हैं, ठीक उसी तरह जैसे एक ही भाषा से अनेक नई भाषाएँ उत्पन्न होती हैं। जैसे संस्कृत से हिंदी और दूसरी भाषाएँ अस्तित्व में आईं। लैटिन भी इटैलियन, फ्रेंच, स्पेनिश, रोमानियन और पुर्तगाली भाषाओं की जननी रही। यानी दुनिया में आज जितनी भी बोलियाँ हैं वो किसी न किसी पुरानी भाषा से पैदा हुई हैं।

भाषाएँ लगातार बदलती रहती हैं और दूसरी भाषाओं के संपर्क में आकर नए स्वरूप में ढलती जाती हैं। भाषा-विशेषज्ञ इसके तीन मुख्य कारण बताते हैं। पहला, समय—जिसके साथ भाषाओं का रूप-रंग बदलता है, नए शब्द जुड़ते हैं और पुराने लुप्त हो जाते हैं। दूसरा, भाषाई संपर्क—जब दो भाषाएँ मिलती हैं, तो एक भाषा दूसरी के शब्द और व्याकरण को अपना लेती है। तीसरा, संवाद की आवश्यकता—अलग भाषाओं के लोग जब आपस में बात करते हैं, तो भाषा को सरल बनाते हैं। इसी प्रक्रिया से नई भाषाओं का जन्म होता है।

अनेक बदलावों के बावजूद आज भी भारत की सांस्कृतिक और भाषाई विविधता अपने मूल स्वरूप में कायम दिखती है। हमारे लिए जितनी महत्वपूर्ण हिंदी है उतनी ही तमिल, तेलुगु कन्नड़, पंजाबी, डोगरी, बोडो, मलयालम, बंगला, असमिया, मराठी और कश्मीरी भी है। यदि हिंदी राजभाषा और राष्ट्रभाषा-रूपी गंगा की धारा है तो अन्य प्रदेशिक भाषाएँ भी कावेरी, सतलज और ब्रह्मपुत्र की उप-धाराएँ हैं।

हिंदी न किसी प्रान्त की भाषा रही है और न तो किसी जाति, वर्ग या क्षेत्र विशेष की भाषा रही है। हिंदी बहती नदी की धारा की तरह सब के लिए उपयोगी और कल्याणकारी रही है। यही कारण है गैर हिंदी भाषा भाषी क्षेत्रों के हिंदी उन्नायकों ने हिंदी को जन भाषा के रूप में स्वीकार करते हुए इसके उत्थान के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। वह चाहे गुजराती भाषा-भाषी महर्षि दयानंद और महात्मा गांधी रहे हों, बंगाल के राजाराम मोहन राय, केशवचन्द्र सेन और रवींद्र नाथ टैगोर तथा नेता सुभाष रहे हों, या महाराष्ट्र के नामदेव, गोखले और रानाडे रहे हों। इसी तरह तमिलनाडु के सुब्रह्मण्यम भारती, पंजाब के लाला लाजपत राय, आंध्र प्रदेश के प्रो. जी. सुंदर रेड्डी जैसे अनेक अहिंदी भाषा-भाषी क्षेत्रों में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए अनेक महत्वपूर्ण कार्य किए।

हिंदी और भारतीय भाषाओं का स्वभाव एक जैसा है। किसी भी स्तर पर टकराव नहीं है। फिर क्यों हिंदी का विरोध गैरहिंदी भाषा-भाषी क्षेत्रों में यत्र-तत्र देखा जाता है? यह प्रश्न अत्यंत महत्वपूर्ण है। दरअसल, आजादी के पहले अंग्रेजों ने भारतीय भाषाओं का वर्गीकरण कराया था, उसके पीछे न कोई भाषाई तथ्य, व्याकरण और लिपि का आधार था और न ही सांस्कृतिक या धार्मिक ही। भारतीय भाषाओं का वर्गीकरण इस तरह से किया गया कि जिससे यह साबित हो सके कि आर्य भाषा परिवार' की भाषाओं और 'द्रविड़ भाषा परिवार' की भाषाओं में न पूरकता है और न कोई अंतर्संबंध ही गौरतलब है 'आर्य भाषा परिवार' का नामकरण मैक्समूलर के द्वारा किया गया और द्रविड़ भाषा परिवार' का नामकरण पादरी राबर्ट काल्डवेल के द्वारा। लेकिन हाल के वर्षों में हुए भारत एक भाषायी क्षेत्र जैसे तथ्य परक अध्ययन से यह साफ हो गया है कि भारतीय भाषाएँ ''एक ही भूखंड की भाषा होने के कारण भारतीय भाषाओं की वाक्य रचना में, प्रकृति और प्रत्यय में, शब्द और धातु में, भाव-धारा और चिंतन प्रणाली में और कथन-शैली में प्रत्येक स्तर पर समानता है।'' अतः हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ एक ही सांस्कृतिक और भाषिक परंपरा से जुड़ी हैं, इसलिए उनमें गहरा अंतर्संबंध और पारस्परिक प्रभाव हिंदी की एकसूत्रात्मक प्रवृति का द्योतक है।

प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी
निदेशक

निदेशक ने लिया विश्व-रंग कार्यक्रम में हिस्सा

कोलंबो (श्रीलंका) में 'विश्व रंग' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी को आमंत्रित किया गया था। कार्यक्रम में सम्मिलित होने के दौरान निदेशक महोदय ने संस्थान में अध्ययन कर चुके श्रीलंका के विद्यार्थियों के साथ संवाद किया। संवाद कार्यक्रम में श्रीलंका में हिंदी प्रचार-प्रसार के संबंध में चर्चा की गई।

विद्यालय संपर्क कार्यक्रम

संस्थान के अध्यापक शिक्षा विभाग द्वारा शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों हेतु दिनांक 02-09-2025 से 11-09-2025 तक आगरा शहर के स्टुअर्ट वार्ड मेमोरियल उ.मा. विद्यालय सिकंदरा, कम्पोजिट स्कूल नगला सोहनलाल,ब्लॉक बिचपुरी एवं महाकवि सूर स्मारक इंटर कॉलेज, सुरकुटी रुनकता, आगरा, में विद्यालय संपर्क कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभागीय अध्यापकों के मार्गदर्शन में शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों द्वारा विद्यालय अवलोकन आदि कार्य किया गया।

शिक्षक प्रशिक्षुता कार्यक्रम

संस्थान के अध्यापक शिक्षा विभाग द्वारा संचालित हिंदी शिक्षण निष्णात (तृतीय सेमेस्टर) के शिक्षक प्रशिक्षुओं के लिए 15 दिवसीय प्रशिक्षुता (इंटर्नशिप) कार्यक्रम के अंतर्गत 08(आठ) दिवसों का शिक्षक प्रशिक्षुता (इंटर्नशिप) कार्यक्रम जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, आगरा तथा शिक्षा संकाय, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, दयालबाग, आगरा में आयोजित किया गया।

ऑनलाइन हिंदी काव्यपाठ

राजभाषा प्रकोष्ठ तथा अंग्रेजी एवं भारतीय भाषा विश्वविद्यालय, हैदराबाद द्वारा दिनांक 26.09.2025 को ऑनलाइन हिंदी काव्य पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में वर्तमान सत्र 2025-26 में अध्ययनरत विदेशी विद्यार्थियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में भाग लेने वाले साउथ अफ्रीका की सुष्मिता को प्रथम, सुवानन को द्वितीय एवं रेव्र गमपाहा धम्म को तृतीय पुरस्कार दिया गया।

सबको जोड़ने का काम करती है हिंदी : निदेशक

हिंदी भाषा संवर्धनात्मक पाठ्यक्रम

नवीकरण एवं भाषा प्रसार विभाग द्वारा दिनांक 26.08.2025 से 12.09.2025 तक हिंदी शिक्षण प्रशिक्षण संस्थान, कटक, उड़ीसा के बी.एड. पाठ्यक्रम के 45 प्रशिक्षणार्थियों हेतु हिंदी भाषा संवर्धनात्मक पाठ्यक्रम संचालित किया गया। पाठ्यक्रम का उद्घाटन दिनांक 26.08.2025 को प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी, निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा की अध्यक्षता में किया गया। अध्यक्षीय उद्बोधन में निदेशक ने कहा कि, हिंदी जोड़ने का कार्य करती है, हिंदी दो राज्यों के बीच मध्यस्तता का कार्य करती है। हिंदी शिक्षण प्रशिक्षण संस्थान, कटक उड़ीसा से पधारे सहायक प्राध्यापक डॉ. निरंजन बेहरा, नवीकरण एवं भाषा प्रसार विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. सपना गुप्ता, पूर्वोत्तर शिक्षण सामग्री निर्माण विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. मीनाक्षी दुबे, अनुसंधान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अरिमर्दन त्रिपाठी की गरिमामयी उपस्थिति रही। प्रो. सपना गुप्ता ने प्रशिक्षण में हिंदी संबंधित प्राप्त होने वाले ज्ञान के बारे में जानकारी प्रेषित की।

उन्होंने कहा कि आप भगवान जगन्नाथ की भूमि से आये हैं, जिस प्रकार जगन्नाथ भगवान मनुष्यों को जोड़ने का संदेश देते हैं उसी प्रकार हिंदी भी जोड़ने का संदेश देती है। 02 प्रशिक्षणार्थियों द्वारा अभिमत अनुभव प्रेषित किया गया। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. शिखा माहेश्वरी द्वारा किया गया। पाठ्यक्रम में निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी, शैक्षिक समन्वयक प्रो. हरिशंकर, डॉ. मीनाक्षी दुबे द्वारा हिंदी भाषा की संरचना एवं भाषा तुलना प्रविधि पर विशेष व्याख्यान दिए गए। प्रो. सपना गुप्ता द्वारा शैक्षिक अध्ययन की कक्षायें ली गई। डॉ. अरिमर्दन त्रिपाठी द्वारा भाषा विज्ञान की कक्षाएं ली गई। डॉ. शिखा माहेश्वरी द्वारा हिंदी भाषा एवं साहित्य का परिचय, अन्य भाषा हिंदी शिक्षण और हिंदी भाषा परिमार्जन की कक्षायें ली गई। प्रशिक्षणार्थियों ने अवकाश दिवसों में आगरा, फतेहपुर सीकरी, मथुरा, वृंदावन के स्थानीय ऐतिहासिक स्थलों का शैक्षिक संदर्शन किया।

पाठ्यक्रम का समापन समारोह दिनांक 12.09.2025 को डॉ. मीनाक्षी दुबे, विभागाध्यक्ष, पूर्वोत्तर शिक्षण सामग्री निर्माण विभाग की अध्यक्षता में हुआ। उन्होंने उड़ीसा से आये प्रशिक्षणार्थियों को आलेख सुधारने एवं आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। हिंदी शिक्षण प्रशिक्षण संस्थान, कटक, उड़ीसा से पधारे सहायक प्राध्यापक श्री रश्मि रंजन दास ने अध्यापकों द्वारा दिए गए प्रशिक्षण की सराहना की एवं आभार व्यक्त किया।

चार प्रशिक्षणार्थियों ने अपने अभिमत अनुभव मंच से साझा किए और अन्य प्रशिक्षणार्थियों ने ओड़िया नृत्य, संबलपुरी नृत्य, हिंदी गीत पर सामूहिक नृत्य प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. शिखा माहेश्वरी द्वारा किया गया।

दिल्ली केंद्र

श्रीलंका में मनाया गया हिंदी दिवस

स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र, कोलंबो पर दिनांक 12 एवं 13 सितंबर 2025 को हिंदी दिवस का भव्य आयोजन किया गया। इसमें भारतीय सांस्कृतिक परिषद तथा केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किए गए। इस कार्यक्रम में केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा की ओर से प्रोफेसर धनजी प्रसाद और डॉ. रेणु चौधरी द्वारा सहभागिता की गई। प्रोफेसर धनजी प्रसाद ने इस कार्यक्रम में वैश्विक हिंदी और आधुनिक प्रौद्योगिकी विषय पर बोलते हुए कहा कि वर्तमान समय में उपलब्ध तकनीकी उपकरणों का अधिकाधिक प्रयोग वैश्विक स्तर पर हिंदी सीखने-सिखाने में किया जाना चाहिए। इससे हिंदी शिक्षण अधिगम न केवल सरल होगा, बल्कि यह रुचिकर भी होगा। डॉ. रेनू चौधरी ने हिंदी की समावेशी प्रकृति पर सबका ध्यान आकृष्ट किया और कहा कि हिंदी ऐसी भाषा है जो सहज ही दूसरे भाषाओं के शब्दों को ग्रहण कर लेती है यह हिंदी की एक अद्भुत शक्ति है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के निदेशक प्रो. अंकुरण दत्ता ने की। इस कार्यक्रम में भारत और श्रीलंका के विभिन्न विद्वानों, शिक्षकों के साथ-साथ बड़ी संख्या में श्रीलंका के विद्यार्थी सम्मिलित हुए।

कोलंबो एवं कैंडी केंद्र की परीक्षा संपन्न

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा द्वारा श्रीलंका में संचालित हिंदी भाषा दक्षता प्रमाण पत्र, डिप्लोमा एवं एडवांस डिप्लोमा की परीक्षा 20 से 22 सितंबर 2025 को कोलंबो और कैंडी केंद्रों पर संपन्न हुई। कोलंबो केंद्र पर डॉ. रेणु चौधरी तथा कैंडी केंद्र पर प्रो. धनजी प्रसाद द्वारा इन परीक्षाओं का सफल संयोजन किया गया।

परीक्षा को सफलतापूर्वक संपन्न कराने में स्थानीय हिंदी शिक्षकों श्रीमती अतिला कोतलावल, सुश्री नधीरा शिवंती, सुश्री अचला करियकरवन, सुश्री दिस्ना जानकी और श्री महेंद्र कुमार (कैंडी) आदि का भी विशेष योगदान रहा।

भाषा आयोग के गठन की माँग

दिल्ली क्षेत्रीय केंद्र पर हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के अंतरसंबंध विषय पर आयोजित संगोष्ठी के समापन सत्र की अध्यक्षता कर रहे प्रो. वी.आर. जगन्नाथन ने मानकीकरण होने के बावजूद भी उसके लेखन और उच्चारण में अंतर की चर्चा करते हुए भारत में एक भाषा आयोग गठित किए जाने की माँग की। इस सत्र के दौरान गोपेश्वर दत्त पांडेय ने भक्ति साहित्य के माध्यम से भारतीय भाषाओं के आपसी जुड़ाव पर प्रकाश डाला। इग्नू के संस्कृत विभाग के डॉ. देवेश कुमार मिश्र, दिल्ली विश्वविद्यालय के डॉ. सुधा कुमारी, अदिति महाविद्यालय, दिल्ली से डॉ. नीलम राठी जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय से प्रो. सुधीर प्रताप सिंह ने अपने विचार व्यक्त किए। धन्यवाद ज्ञापन केंद्र की सहायक आचार्य डॉ. ऋचा गुप्त ने किया।

इससे पूर्व विमर्श सत्र की अध्यक्षता इग्नू के प्रो. नरेन्द्र मिश्र ने की। इस सत्र में डॉ. भारती गोरे, डॉ. मुनीष कुमार, डॉ. छविल कुमार मेहर तथा डॉ. आशुतोष ने भाषाई इतिहास, भारतीय भाषाओं के शब्द संपदा तथा हिंदी को विश्व भाषा बनाए जाने पर जोर दिया। धन्यवाद ज्ञापन केंद्र की सहायक आचार्य डॉ. शोभनीम ने किया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : भाषायी प्रावधान

राष्ट्रीय संगोष्ठी

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा और जानकी देवी मेमोरियल महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के संयुक्त तत्वावधान में 29 सितम्बर 2025 को एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का विषय "राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : भाषायी प्रावधान" था।

संगोष्ठी में देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों से जुड़े विद्वानों, प्राध्यापकों, शोधार्थियों और विद्यार्थियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। संगोष्ठी का शुभारंभ दीप प्रज्वलन से हुआ। महाविद्यालय की प्राचार्य प्रो. स्वाति पाल ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भारतीय भाषाओं को शिक्षा और प्रशासन दोनों स्तरों पर सुदृढ़ करने की जो दिशा दी है, वह हमारे लिए गौरव का विषय है। उन्होंने कहा कि मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करने से न केवल छात्रों की अभिव्यक्ति क्षमता बढ़ेगी, बल्कि ज्ञान का गहन आत्मसात करना भी संभव होगा।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के दिल्ली की क्षेत्रीय निदेशक प्रो. अपर्णा सारस्वत ने की। बीज वक्ता के रूप में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय से प्रो.नरेंद्र मिश्र मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. वंदना झा (जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय) विशिष्ट अतिथि प्रो. भारती गोरे (प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय) ने अपने विचार व्यक्त किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. हितेंद्र मिश्र (निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, दिल्ली) ने की। सत्र के मुख्य अतिथि प्रो. अवनिजेश अवस्थी (आचार्य, पी.जी.डी.ए.वी.कॉलेज, दिल्ली) विशिष्ट अतिथि प्रो. मनोज पाण्डेय (प्रोफेसर, हिंदी विभाग, नागपुर विश्वविद्यालय) ने अपने विचार व्यक्त, किए।

समापन सत्र की अध्यक्षता महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो. स्वाति पाल ने की। इस सत्र में पूरे दिवस हुई चर्चाओं और निष्कर्षों को प्रस्तुत किया गया। प्रमाण पत्र वितरण के साथ इस सत्र का औपचारिक समापन हुआ।

हिंदी दिवस पर विभिन्न कार्यक्रम

केंद्रीय हिंदी संस्थान द्वारा हिंदी दिवस के अवसर पर हिंदी पखवाड़ा के अंतर्गत हैदराबाद केंद्र पर चले 489वें नवीकरण पाठ्यक्रम के प्रशिक्षकों एवं हैदराबाद शहर के 02 विद्यालयों एवं 02 महाविद्यालयों के छात्रों के लिए ''निबंध लेखन, कविता, गीत गायन, हिंदी में पोस्टर निर्माण, बैनर, वाद-विवाद तथा स्वरचित काव्य पाठ'' विषय पर हैदराबाद केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. फत्ताराम नायक के मार्ग दर्शन में प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

इस प्रतियोगिता में विभिन्न विद्यालयों एवं महाविद्यालयों से 117 प्रतिभागियों ने भाग लिया। जिसमें संस्थान द्वारा चलाए जा रहे 489वें नवीकरण पाठ्यक्रम के प्रतिभागियों के लिए भाषण प्रतियोगिता जिसका विषय (हिंदी शिक्षण में तकनीकी चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ) का आयोजन किया गया जिसमें शशिराज जी. ने प्रथम स्थान, चौव्हान शिवकुमार ने द्वितीय स्थान एवं रमादेवी चिलुवेरी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

वहीं मेरू इंटरनेशनल स्कूल, मियापुर, हैदराबाद के छात्र-छात्राओं के लिए पोस्टर निर्माण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें चातुर्या तव्वा ने प्रथम स्थान, वीया दुगड़ ने द्वितीय स्थान एवं प्रवण गादे ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। जिला परिषद हाईस्कूल, याप्राल, अलवाल, मेडचल, हैदराबाद के छात्रों के लिए काव्य पाठ गीत, गायन हिंदी पाठ्यपुस्तक की कविता विषय पर प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें खसार बानो ने प्रथम स्थान, मेदराम रोहित ने द्वितीय स्थान एवं डाकुरू नीहारिका ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।सरकारी डिग्री कॉलेज, सीताफल मंडी, सिकंदराबाद के छात्रों के लिए निबंध (शिक्षा में तकनीकी का उपयोग) प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें मोहम्मद खालिद को प्रथम स्थान, मोहम्मद अहमद अली को द्वितीय स्थान, एच. नंदिनी को तृतीय स्थान एवं बी. वेल्लेला कुट्टी को प्रोत्साहन पुरस्कार से नवाजा गया। इंदिरा प्रियदर्शिनी सरकारी डिग्री कॉलेज फार वुमेन (ए), नामपल्ली, हैदराबाद के छात्राओं के लिए स्वरचित काव्य पाठ प्रतियोगिता आयोजित कीगईजिसमें जी. साक्षी ने प्रथम स्थान, प्रियंका शर्मा ने द्वितीय स्थान एवं स्वाति सिंह ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इस कार्यक्रम का समापन समारोह केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र के बहुउदेशीय हॉल में दिनांक 19.09.2025 को केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि प्रो. अनुपमा उपस्थित थीं। इस कार्यक्रम में अतिथियों द्वारा सभी उपस्थित 16 विजेताओं को प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया गया तथा शेष सम्मिलित प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित किया गया। प्रत्येक प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को क्रमशः रु. 1000/-, 700/- एवं 500/- का नगद पुरस्कार संस्थान द्वारा ऑनलाइन माध्यम से दिया जाएगा।

489वाँ नवीकरण पाठ्यक्रम

हैदराबाद केंद्र

केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र द्वारा तेलंगाना राज्यके निर्मल जिले के हिंदी अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए दिनांक 08.09.2025 से 20.09.2025 तक 489वाँ नवीकरण पाठ्यक्रम आयोजित किया गया, जिसका उद्घाटन समारोह दि. 08.09.2025 को संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने आभासीय मंच के माध्यम से की। इस मौके पर पाठ्यक्रम के संयोजक केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. फत्ताराम नायक, डॉ. दीपेश व्यास, अतिथि प्रवक्ता एवं डॉ. एस. राधामंच पर उपस्थित थीं। सर्वप्रथम अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। इस कार्यक्रम में कुल26 (महिला-17, पुरुष-09) प्रतिभागियों ने कक्षा में उपस्थित होकर प्रशिक्षण प्राप्त किया।

उद्घाटन समारोह के अध्यक्ष प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने आभासी मंच के माध्यम से कहा कि प्रशिक्षण के लिए आए हुए शिक्षकों के मन में जो भी जिज्ञासा है या शंकाएँ हैं वे दो सप्ताह के प्रशिक्षण के बाद स्वतः दूर हो जाएँगी। इस प्रशिक्षण शिविर से हिंदी भाषा के अलावा कौशल विकास भी विकसित होगा तथा आपके अंदर की प्रतिभाएँ भी सामने आएँगी। इस दौरान आपको विषय के इतर बहुत कुछ सीखने को मिलेगा।

पाठ्यक्रम संयोजक डॉ. फत्ताराम नायक कार्यालय अधीक्षक डॉ. एस. राधा तथा डॉ. दीपेश व्यास ने भी अपने विचार व्याक्त किए। इस कार्यक्रम का समापन समारोह दि. 19.09.2025 को संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता .. केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने आभासीय मंच के माध्यम से की। मुख्य अतिथि के रूप में हैदराबाद विवेकानंद शासकीय महाविद्यालय, विद्यानगर, के हिंदी विभाग की प्रो. अनुपमा उपस्थित रहीं। इस अवसर पर पाठ्यक्रम संयोजक डॉ. फत्ताराम नायक, डॉ. दीपेश व्यास, अतिथि प्रवक्ता एवं डॉ. एस. राधा उपस्थित थीं।

मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. अनुपमा क्षेत्रीय निदेशक डॉ. फत्ताराम नायक, डॉ. दीपेश व्यास तथा डॉ. एस. राधा ने अपने विचार व्क्तक किए।

इस कार्यक्रम का संचालन एवं आभार ज्ञापन ए. वेंकटेश द्वारा किया गया। प्रतिभागियों ने हस्तलिखित पत्रिका 'निर्मल-सरस्वती सौरभ' की रचना की। समापन समारोह के दौरान अतिथियों द्वारा हस्तलिखित पत्रिका का लोकार्पण किया गया।

प्रतिभागियों को अतिथियों के द्वारा प्रमाण पत्र वितरित किए गए। पर-परीक्षण के आधार पर उत्तम अंक प्राप्त छात्रों को विशेष पुरस्कार दिए गए। चंद्रप्रकाश जैस्वाल को प्रथम, जी. दीप्ति को द्वितीय, एस. गीता राणि को तृतीय पुरस्कार प्रदान किए गए। ए. रघुनाथ को प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम के पश्चात राष्ट्रगान से कार्यक्रम का समापन हुआ।

हिंदी भारतीय एकता का सूत्र : महामहिम राज्यपाल

केंद्रीय हिंदी संस्थान, शिलांग केंद्र एवं राजभवन, शिलांग के संयुक्त तत्वावधान में हिंदी दिवस/हिंदी पखवाड़े के उपलक्ष्य में 16 सितंबर, 2025 को राजभाषा हिंदी कार्यशाला, कला प्रदर्शनी, काव्य-गोष्ठी एवं संस्थान प्रकाशन की पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित की गई। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री सी.एच. विजयशंकर, (महामहिम राज्यपाल, मेघालय), विशिष्ट अतिथि पद्मश्री श्रीमती सिल्बी पासाह तथा अध्यक्ष प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी, निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, रहे।

कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि महामहिम राज्यपाल श्री सी.एच. विजयशंकर का स्वागत अभिनंदन प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी, निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा तथा प्रो. पार्थ सारथी पाण्डेय, क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र शिलांग ने उत्तरीय, पुष्प-गुछ शॉल एवं राममंदिर की प्रतिकृति भेंट कर किया। इस अवसर पर डॉ. ब्रह्मदेव राम तिवारी(आई.ए.एस.), आयुक्त एवं सचिव माननीय राज्यपाल (मेघालय), केंद्रीय हिंदी निदेशालय, दिल्ली के निदेशक प्रो. हितेन्द्र कुमार मिश्र एवं शिलांग नगर के विविध केंद्रों एवं राज्य सरकार के संस्थानों के गणमान्य अतिथि उपस्थित थे।

कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र की शुरुआत पुलिस बैंड द्वारा राष्ट्रगान के पश्चात महामहिम द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ हुई। कार्यक्रम में स्वागत वक्तव्य डॉ. ब्रह्मदेव राम तिवारी (आई.ए.एस.) तथा स्वागत गीत श्री आनंद कुमार (आई.आर.एस.) द्वारा प्रस्तुत किया गया। स्वागत वक्तव्य में डॉ. ब्रह्मदेव राम तिवारी (आई.ए.एस.) ने कहा कि लगभग 150 वर्षों के इतिहास में राजभवन, शिलांग में पहली बार इस प्रकार के कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। इसके लिए उन्होंने क्षेत्रीय केंद्र शिलांग को बधाई दी।

उद्घाटन सत्र में महामहिम राज्यपाल एवं सम्मानित अतिथियों द्वारा छह पुस्तकों। केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा, क्षेत्रीय केंद्र शिलांग की पुस्तक 'हिंदी शिक्षण में भारतीय भाषाओं का योगदान (पूर्वोत्तर भारत के विशेष संदर्भ में)', शिलांग केंद्र द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका 'समन्वय पूर्वोत्तर' के दो अंक, श्रीमतीजया कालरा की पुस्तक अवेकिंग टू हीलिंग सुश्री इबारपीती मृथोंग तथा आईआईएम शिलांग की एक-एक पुस्तक का लोकार्पण किया गया।

मुख्य अतिथि मेघालय के महामहिम राज्यपाल श्री सी.एच. विजयशंकर ने अपने वक्तव्य में हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं विकास के लिए शिलांग केंद्र की प्रशंसा एवं सराहना की। उन्होंने कहा हिंदी का उद्देश्य अन्य भाषाओं को प्रतिस्थापित करना या उन पर हावी होना नहीं है; बल्कि यह उनके साथ सह-अस्तित्व में रहकर राष्ट्रीय एकता को मजबूत करना और भाषाई विविधता का सम्मान करना है। उन्होंने पूर्वोत्तर भारत में हिंदी भाषा के उन्नयन हेतु केंद्रीय हिंदी संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र शिलांग के अथक प्रयास की सराहना की तथा उन्हें आगामी कार्यक्रमों के लिए शुभकामनाएं दी। साथ ही, उन्होंने केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी के देशभर में हिंदी के विकास में किए जा रहे प्रयासों की प्रशंसा की।

प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा राजभवन शिलांग में राष्ट्रभाषा हिंदी का कार्यक्रम आयोजित करना महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि पूर्वोत्तर एवं मेघालय में राजभाषा हिंदी की स्वीकार्यता एवं कार्यान्वयन को बढ़ाने हेतु हिंदी पखवाड़ा के अवसर पर ऐसे कार्यक्रम विशेष योगदान देते हैं। इस सत्र में चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन महामहिम राज्यपाल के द्वारा किया गया। उद्घाटन सत्र के बाद काव्य-गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने तथा संचालन कवि विनीत पाण्डेय एवं श्री पवन आगरी ने किया। धन्यवाद ज्ञापन प्रो. पार्थ सारथी पांडेय ने किया। ●

हिंदी में है रोजगार की संभावना

पीएमश्री नवोदय विद्यालय जोवाई, मेघालय में दिनांक 06.09.2025 को क्षेत्रीय निदेशक प्रो. पार्थ सारथी पाण्डेय को विद्यालय के कक्षा 11-12 वीं के बच्चों के लिए करियर काउंसलिंग एवं हिंदी भाषा में रोजगार के अवसर के विषय में उद्बोधन के लिए आमंत्रित किया गया।

इस कार्यक्रम में विद्यालय के कक्षा 11-12 वीं में अध्ययनरत बच्चों को संबोधित करते हुए प्रो. पार्थ सारथी पाण्डेय ने कहा कि हिंदी केवल विचारों के संप्रेषण की भाषा नहीं है बल्कि यह पूर्वोत्तर क्षेत्र में रोजगार की भाषा है। ●

क्षेत्रीय केंद्र शिलांग का संदर्शन

केंद्रीय हिंदी संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र परिसर शिलांग का संदर्शन दिनांक 17.09.2025 को कविश्री राकेश दांगी, इंदौर एवंकवयित्री सुश्री शिवांगी शर्मा 'प्रेरणा', भोपाल ने किया। दिनांक 25.09.2025 को भारतीय पुनर्वास परिषद, शिलांग के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. रामसकल साहनी एवं उनके कर्मचारियों ने क्षेत्रीय केंद्र परिसर शिलांग का संदर्शन किया।

हिंदी को मिले उचित स्थान

हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा के अवसर पर दिनांक 19.09.2025 को अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, क्षेत्रीय परिसर शिलांग में क्षेत्रीय निदेशक प्रो. पार्थ सारथी पाण्डेय को विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। इस कार्यक्रम में क्षेत्रीय निदेशक का स्वागत अभिनंदन प्रो. मौसमी गुहा बनर्जी, क्षेत्रीय निदेशक,अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, शिलांग ने पुष्पगुच्छ एवं स्मृति चिन्ह के द्वारा किया। ●

देश-दुनिया में सर्वमान्य भाषा है हिंदी

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा (शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार) के क्षेत्रीय केंद्र, शिलांग द्वारा मेघालय राज्य के शंकरदेव कॉलेज, शिलांग के स्नातक छात्रों के लिए प्रथम हिंदी भाषा संचेतना शिविर पाठ्यक्रम दिनांक 08.09.2025 से 19.09.2025 तक शंकरदेव कॉलेज, शिलांग में आयोजित किया गया। इस पाठ्यक्रम में शंकरदेव कॉलेज, शिलांग के विभिन्न विषयों के स्नातक विद्यार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस हिंदी भाषा संचेतना शिविर के संयोजक केंद्रीय हिंदी संस्थान, शिलांग केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. पार्थ सारथी पांडेय तथा पाठ्यक्रम प्रभारी डॉ. मयंक, सहायक प्रोफेसर, केंद्रीय हिंदी संस्थान, शिलांग केंद्र थे। इस पाठ्यक्रम में शंकरदेव कॉलेज, शिलांग के विभिन्न स्नातक पाठ्यक्रमों के 83विद्यार्थियों (34 पुरुष एवं 49 महिला) ने पंजीकरण प्राप्त किया। प्रतिभागियों का हिंदी भाषा का ज्ञान का स्तर मुख्यतः प्रारंभिक स्तर का था तदनुसार भाषा संचेतना शिविर पाठ्यक्रम में अध्यापन कार्य प्रारंभ करने के पहले प्रतिभागियों के ज्ञान का आकलन करने के लिए मौखिक पूर्व-परीक्षण लिया गया।

दिनांक 09-09-2025 को आयोजित उद्घाटन समारोह में ऑनलाइन माध्यम से अध्यक्ष के रूप में केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने हिस्सा लिया। मुख्य अतिथि के रूप मेंडॉ. यूरेका एफ. पी. लिंगदोह, प्राचार्य शंकरदेव कॉलेज, शिलांग उपस्थित थीं। उद्घाटन कार्यक्रम में प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णीने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में शंकरदेव कॉलेज में भाषा संचेतना शिविर पाठ्यक्रम आयोजित करने हेतु शुभकामनाएं एवं बधाई प्रेषित की। उन्होंने प्रतिभागी विद्यार्थियों को पूर्ण सामर्थ्य से नियमित रूप से हिंदी सीखने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि पाठ्यक्रम पूर्ण करने के उपरांत प्रतिभागी हिंदी भाषा के माध्यम से सम्प्रेषण करने में सक्षम होंगे। वे सम्पूर्ण भारतवर्ष से हिंदी के माध्यम से जुड़ने में सफल होंगे। उन्होंने कहा कि सफलता प्राप्त करने के लिए परिश्रम आवश्यक है। शिलांग केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. पार्थ सारथी पाण्डेय मुख्य अतिथि डॉ. लिंगदोहने ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन पाठ्यक्रम प्रभारी डॉ. मयंक ने किया एवं धन्यवाद ज्ञापन अतिथि अध्यापक सुश्री लखमी रानी बोरा ने किया। अंत में राष्ट्रगान के साथ उद्घाटन कार्यक्रम समाप्त हुआ।

कार्यक्रम में डॉ. मयंक, अतिथि अध्यापक श्री आकाश कुमार, श्री शंभू नाथ पाण्डेय और सुश्री लखमी रानी बोरा,श्री प्रतिभागी विद्यार्थी-गण एवं शंकरदेव कॉलेज के प्राध्यापक एवं अधिकारीगण उपस्थित थे।

दिनांक 19-09-2025 को समापन समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल शंकरदेव कॉलेज के प्रो. काशीनाथ ने कहा कि पूर्वोत्तर में द्वितीय या तृतीय भाषा के रूप में हिंदी सीखने में व्याकरण, आदि की समस्या आती है। उन्होंने केंद्रीय हिंदी संस्थान, शिलांग केंद्र का शंकरदेव कॉलेज में पाठ्यक्रम करवाने के लिए धन्यवाद प्रेषित किया और भविष्य में भी ऐसे पाठ्यक्रम आयोजित करने के लिए आशा प्रकट की।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. मयंक ने किया एवं धन्यवाद ज्ञापन अतिथि अध्यापक श्री आकाश कुमारने किया। कार्यक्रम में अतिथि अध्यापक श्री आकाश कुमार, श्री शंभू नाथ पाण्डेय और सुश्री लखमी रानी बोरा, प्रतिभागी, विद्यार्थी-गण, शंकरदेव कॉलेज के प्राध्यापक एवं अधिकारीगण तथा शिलांग केंद्र के कर्मचारी उपस्थित थे। ●

मैसूर केंद्र

कन्नड़-हिंदी पर्याय कोश

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के मैसूर केंद्र पर दिनांक 03.09.2025 से 08.09.2025 तक आयोजित कन्नड़-हिंदी पर्याय कोश निर्माण हेतु छठवीं कार्यशाला का सफल आयोजन संपन्न हुआ। इस छह दिवसीय कार्यशाला में कोश संयोजक प्रो. टी. आर. भट्ट, सेवानिवृत्त प्रोफेसर, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़ के सानिध्य में विषय विशेषज्ञ के रूप में डॉ. संजय प्रसाद श्रीवास्तव, भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर एवं प्रो. श्रीधर हेगड़े, हिंदी विभाग, मैंगलूर, विश्वविद्यालय, कर्नाटक ने कार्य किया।

शिक्षक दिवस पर वृक्षारोपण

दिनाँक 5 सितंबर, 2025 को क्षेत्रीय केंद्र, मैसूर द्वारा वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान क्षेत्रीय निदेशक, मैसूर केंद्र डॉ. रणजीत भारती, प्रो. टी. आर. भट्ट, डॉ. संजय प्रसाद श्रीवास्तव, भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर, सी आई. आई. एल. में कार्यरत राष्ट्रीय अनुवाद मिशन के संयोजक एवं सहायक प्रोफेसर, डॉ. तारिक खान एवं प्रो. श्रीधर हेगड़े, हिंदी विभाग, मैंगलूर, विश्वविद्यालय, कर्नाटक द्वारा वृक्षारोपण कर शिक्षक दिवस मनाया गया।

व्याख्यान

के.हिं.सं. के मैसूर केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. रणजीत भारती ने केंद्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, मैसूर द्वारा दिनाँक 23.09.2025 को आयोजित एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला में व्याख्यान दिया गया।

व्याख्यान के दौरान डॉ. भारती द्वारा प्रतिभागियों को मानक हिंदी वर्तनी एवं कार्यालयी हिंदी के बारे में जानकारी दी गई। डॉ. भारती ने अपने व्याख्यान के दौरान यूनिकोड में मानक हिंदी में टाइपिंग एवं केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा तैयार मानक हिंदी वर्तनी के बारे में चर्चा की। इसके बाद उन्होंने कार्यालय हिंदी में मानक हिंदी के प्रयोग एवं लेखन के बारे में प्रतिभागियों को प्रशिक्षित किया। ●

गुवाहाटी केंद्र

हिंदी पखवाड़ा के तहत कार्यक्रम

गुवाहाटी केंद्र के सौजन्य से हिंदी पखवाड़ा के अंतर्गत कॉटन विश्वविद्यालय,गुवाहाटी के हिंदी विभाग द्वारा दिनांक 18.09.2025 को विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इसके अंतर्गत हिंदी विभाग के स्नातक छात्रों के लिए आशु भाषण एवं निबंध लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई। इन प्रतियोगिताओं में लगभग सत्तर छात्र-छात्राओं ने भाग लिया।

हिंदी विभाग के स्नातकोतर छात्रों के लिए भी आशु भाषण एवं निबंध लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई। इन प्रतियोगिताओं में भी लगभग सत्तर

छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। प्रतियोगिताओं के आयोजन हेतु संस्थान के गुवाहाटी केंद्र से प्रशासनिक सदस्य सुश्री सुजाता सिन्हा एवं श्री नयन डेका उपस्थित रहे। इन सभी प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त करनेवाले प्रतिभागी छात्रों को संस्थान द्वारा पुरस्कार राशि एवं प्रमाण पत्र प्रदान किये जायेंगे। ●

दीमापुर केंद्र

निबंध एवं वाद-विवाद प्रतियोगिता

केंद्रीय हिंदी संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, दीमापुर एवं राजकीय हिंदी संस्थान, दीमापुर के संयुक्त तत्वावधान में हिंदी पखवाड़ा समारोह-2025 का भव्य आयोजन 18 एवं 19 सितंबर को राजकीय हिंदी संस्थान परिसर, दीमापुर (नागालैंड) में संपन्न हुआ। समारोह का उद्देश्य हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार, जागरूकता एवं प्रोत्साहन के साथ-साथ विद्यार्थियों में हिंदी के प्रति रुचि और चेतना का विकास करना रहा।

समारोह के प्रथम दिवस, 18 सितंबर को निबंध लेखन प्रतियोगिता एवं वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई। इन प्रतियोगिताओं में राजकीय हिंदी संस्थान, दीमापुर के कुल 40 छात्र-छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। ●

पृष्ठ 1 का शेष

अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि प्रवेशित विद्यार्थी भाग्यशाली हैं। प्रवेश परीक्षा के समय यह संख्या बहुत अधिक होती है लेकिन चयन कुछ ही विद्यार्थियों का होता है। प्रवेश देते समय यह ध्यान रखा जाता है कि भारत के हिंदीतर भाषी राज्यों का प्रतिनिधित्व हो। भविष्य में छूटे हुए राज्यों को भी प्राथमिकता देनी है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के रूप मे केंद्रीय हिंदी संस्थान का विस्तार होगा तो उन राज्यों को प्राथमिकता देंगे और क्षेत्रीय केंद्रों में भी यही पाठ्यक्रम लागू किए जाएँगे। कार्यक्रम के आरंभ में प्रो. चंद्रकांत कोठे ने स्वागत वक्तव्य, संस्थान एवं विभागीय परिचय देते हुए कहा कि केंद्रीय हिंदी संस्थान लघु विश्व है। यह केवल भारत में ही नहीं अपितु विश्वमें भी हिंदी को गौरव दिलाने का कार्य कर रहा है।

यह संस्थान भाषा, संस्कृति और साहित्य का संगम है। यहाँ अध्ययन अध्यापन की अद्यतन विधियों का विकास किया जाता है। आने वाले समय में संस्थान के विभागों और पाठ्यक्रमों का स्वरूप बदलने वाला है। यह केवल शैक्षणिक संस्था ही नहीं बल्कि राष्ट्र की आत्मा का मजबूत स्तंभ है। प्रो. हरि शंकर, शैक्षिक समन्वयक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा ने कहा कि विश्वबंधुत्व एवं अनेकता में एकता भारतीय संस्कृति का मूलमंत्र है। अतः हमें अपनी संस्कृति को भूलना नहीं चाहिए। हमारी संस्कृति हमारे आचार-विचार एवं व्यवहार में प्रतिबिंबित होती है इसलिए हमें विद्यार्थियों को ऐसी शिक्षा देनी चाहिए जिससे उनका जीवन परिवर्तित हो सके।

इस अवसर पर अध्यापक शिक्षा विभाग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों द्वारा अरूणाचल प्रदेश नृत्य, नागालैंड जनजातीय गान, दक्षिण भारतीय नृत्य, नेपाली नृत्य, सात राज्यों का नृत्य, बंगाली नृत्य, आदिवासी नृत्य, नाटक मंचन, कृष्ण रास लीला आदि रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दी गई। ●

प्रकाशन विभाग

संस्थान प्रकाशनों की बिक्री से संबंधित भुगतान को ऑनलाइन स्वीकार करने की सुविधा उपलब्ध है इसके लिए पृथक से खाता खोला गया है। क्यू आर कोड के माध्यम से भी भुगतान किया जा सकता है।

खाता विवरण इस प्रकार है-

Account Holder's Name:
THE KENDRIYA
HINDI SHIKSHANA MANDAL AGRA
Account Number : 42583260224
IFSC : SBIN0017686
MICR : 282002047
Branch : KHANDARI CROSSING AGRA

नोटः 1. संस्थान की प्रकाशन सूची संस्थान वेबसाईट www.hindisansthan.in पर उपलब्ध है।

2. सूची में से चयनित पुस्तकों का क्रयादेश ई-मेल publicationmanagerkhs@gmail.com पर भेजा जा सकता है।

Merchant Name :
THE KENDRIYA HINDI SHIKH-SANA MANDAL
UPI ID : thekhsmagra@sbi

अर्थांतर

‘चिंतन’ और ‘मनन’

‘चिंतन’ अपनी ‘चिंत्’ धातु के और ‘मनन’ अपनी ‘मन्’ धातु के अर्थ ‘सोचना’ से अपनी यात्रा शुरू करते हैं। इन की आपसी दूरी को पकड़ने के लिए ‘मनन’ के अर्थ क्षेत्र में ‘मन लगाकर सोचना, सब अंगों पर बार-बार विचार करना’ और ‘गहन चिंतन’ जोड़ लीजिए।

‘मानक हिंदी कोश’ के अनुसार इन शब्दों का प्रयोग कुछ उदाहरणों से समझा जा सकता है- ‘यह विषय अच्छी तरह चिंतन करने योग्य है। ईश्वर चिंतन में समय बिताना।’ ‘आध्यात्मिक ग्रंथों का मनन। राजनीतिक समस्याओं पर मनन।’

अंतर को और अधिक स्पष्ट करने के लिए शब्दों के इस जोड़े का प्रयोग-क्रम आगामी वाक्यों में देखिए। ‘डॉ. पराक्रम सिंह किसी चिंतन-मनन में लीन है? पराक्रम मनन-चिंतन में लीन है।’ इसमें पहला वाक्य सही है क्योंकि अर्थ और भाव की एक दृष्टि से चिंतन को मनन की पूर्व स्थिति भी कहा जा सकता है।

‘चिंतन’ में प्रयास न्यूनाधिक निर्णीत रहता है, ‘मनन’ प्रायः तर्क-वितर्क युक्त रहता है। हम कह सकते हैं कि ‘चिंतन’ सीधा चलता है और ‘मनन’ घूम-घूम कर अपनी दूरी तय करता है।

अंतर की और अधिक स्पष्टता के लिए एक-एक उदाहरण और देखते हैं- योगेंद्र राणा ने डॉ. पराक्रम से कहा, ‘आप चिंता मुक्त होने के लिए ध्यानस्थ होकर चिंतन कीजिए।’ जटिल अंगों के कैंसर की दवा के लिए वर्षों से मनन और परीक्षण चल रहे हैं।’

चिंतन अधिकतर अंतर्दृष्टि पर केन्द्रित है, जबकि मनन में तर्क, विवेचना और गहन विचार का समावेश है। इसलिए, चिंतन ज्ञान की शुरुआत है और मनन उसे सिद्ध करने का माध्यम।’

प्रस्तुति- अनिल तिवारी

ज्ञान का आगार हैं संगोष्ठियाँ

संगोष्ठियां ज्ञान की आगार होती है। संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य ज्ञान को समग्र, सार्थक और शोध-परक स्वरूप देते हुए भावी रणनीति तैयार करना होता है। केंद्रीय हिंदी संस्थान हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार तथा सर्व शैक्षणिक उन्नयन के लिए एक निश्चित समय अंतराल के साथ सदैव से संगोष्ठियों के आयोजन में सहयोग देता रहा है। बीते सितंबर महीने में भी मुख्यालय और उसके क्षेत्रीय केंद्रों की अगुवाई में संगोष्ठी आयोजित हुई। संस्थान समाचार के पाठकों के लिए प्रस्तुत है कुछ संगोष्ठियों की संक्षिप्त रिपोर्ट।

कौशल विकास में सहायक है संत साहित्य

दिनांक 03 एवं 04 सितंबर, 2025 को केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा तथा मस्त्योदरी कला, वाणिज्य, विज्ञान महाविद्यालय अंबड के हिंदी विभाग के संयुक्त तत्वावधान में 'भारतीय भक्ति साहित्य के माध्यम से विविध कौशलों का विकास' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई।

उद्घाटन सत्र में केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा के निदेशक प्रोफेसर डॉ. सुनील कुळकर्णी ने अपने उद्बोधन में उपस्थित अनुसंधानकर्ताओं को मार्गदर्शन करते हुए कहा कि भक्ति काल को स्वर्ण काल कहा जाता है और भक्ति काल से श्रवण कौशल, वाचन कौशल तथा प्रबंधन कौशल, सृजन कौशल के साथ विभिन्न कौशलों को आत्मसात किया जा सकता है। उन्होंने मध्यकालीन कवि संत कबीर की वाणी की प्रासंगिकता तथा उनके काव्य कौशल का जिक्र करते हुए।

संत तुकाराम महाराज, संत ज्ञानेश्वर, उनकी ज्ञानेश्वरी तथा रामायण, सूरदास का भ्रमरगीत, समर्थ रामदास के मन प्रबंधन के काव्य पर प्रकाश डाला। संत साहित्य सही मायने में संवाद कौशल के साथ-साथ व्यक्तित्व विकास में सहायक है। आज भी छात्र संत साहित्य के माध्यम से संवाद, प्रबंधन कौशल से सफलता अर्जित कर सकते हैं। जन जन का उद्बोधन भक्ति साहित्य करता है। इस मौके पर हैदराबाद के क्षेत्रीय निदेशक डा. फत्ताराम नायक भी उपस्थित रहे।

पूर्वोत्तर भारत में हिंदी की परंपरा एवं प्रयोग

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी एवं हिंदी विभाग रबीन्द्रनाथ ठाकुर विश्वविद्यालय, होजाई, असम के संयुक्त तत्त्वावधान में 14 एवं 15 सितम्बर, 2025 को रवीन्द्रनाथ ठाकुर विश्वविद्यालय, होजाई के 'भारत तीर्थ भवन' में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का औपचारिक उद्घाटन क्षेत्रीय निदेशक डॉ. चन्द्रशेखर चौबे के वक्तव्य से हुआ, जिसमें उन्होंने हिंदी शिक्षण-प्रशिक्षण में संस्थान की भूमिका को रेखांकित किया।

संगोष्ठी के संयोजक डॉ. नागेश्वर यादव ने सभा की उद्देश्य व्याख्या की। अपने बीज वक्तव्य में डॉ. हरेराम पाठक ने हिंदी के विकास में संस्थागत प्रयास, व्यक्ति की दृढ़ इच्छा शक्ति, मिडिया, संचार माध्यमों एवं शिक्षण संस्थानों को रेखांकित किया।

डॉ. मनोज कुमार स्वामी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में हिंदी को सांस्कृतिक समन्वय एवं भावात्मक एकता की सेतु बताया।

दूसरे दिन 15 सितम्बर, 2025 को दो तकनीकी सत्रों के उपरांत समापन समारोह का आयोजन रबीन्द्रनाथ ठाकुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति प्रो. मानवेन्द्र दत्त चौधरी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

भारतीय ज्ञान परंपरा

केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा के सहयोग से दिनांक 12 सितंबर 2025 को पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ के हिंदी विभाग द्वारा भारतीय ज्ञान परंपरा का हिंदी साहित्य पर प्रभाव विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

विश्वविद्यालय के गोल्डन जुबली हाल में आयोजित कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रोफेसर अशोक कुमार, संकाय सदस्य प्रोफेसर बैजनाथ प्रसाद, प्रोफेसर गुरमीत सिंह एवं डॉ विनोद कुमार ने अतिथियों का स्वागत सत्कार किया।

कार्यक्रम की मुख्य संरक्षक विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर रेनू विग ने आयोजन के लिए विभाग की सराहना की। बीज वक्ता के रूप में दिल्ली विश्वविद्यालय के डॉ रामनारायण पटेल, मुख्य अतिथि के तौर पर डॉ भीमराव अंबेडकर स्टडी सर्किल के देवेंद्र सिंह ने हिस्सा लिया। डॉ दुन्नी चंद ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। अंत में प्रोफेसर अशोक कुमार ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। दो तकनीकी सत्रों के उपरान्त हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय महेंद्रगढ़ के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ कामराज सिंह की अध्यक्षता में आयोजित समापन सत्र में विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ सलिल जैन ने हिस्सा लिया।

इस सत्र में डॉ कश्मीरी लाल, डॉ अरुण कुमार, डॉ सुधीर मेहरा डॉ पंकज श्रीवास्तव ने भी अपनी बातें रखीं।

'समकालीन साहित्य में युवा

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा (मैसूर केंद्र) द्वारा अनुदानित, बी.वी. भूमरड्डी कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, बीदर (कर्नाटक) में 'समकालीन साहित्य में युवाओं की प्रासंगिकता/मानसिकता' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। यह संगोष्ठी समकालीन साहित्य में युवाओं की मानसिकता, संघर्ष एवं प्रासंगिकता संबंधी विमर्श पर केंद्रीत थी।

मैसूर केंद्र की ओर से क्षेत्रीय निदेशक, डॉ. रणजीत भारती एवं लघु श्रेणी लिपिक श्री राघवेंद्र ने सहभागिता की।इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में पूरे देश सेलगभग 250 प्राध्यापक गण हिंदी विद्वान एवं शोधार्थी ने पंजीकरण किया तथा 98 आलेखों का पुस्तक विमोचन किया गया तथा भविष्य में द्वितीय संस्करण भी प्रकाशन किया जाएगा। इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्राध्यापक गण हिंदी विद्वान एवं शोधार्थी, महाविद्यालय के सभी विभागों के विभागाध्यक्ष, प्राध्यापक गण तथा छात्र-छात्राएं उपस्थित थे और आभासी पटल पर भी देश के कई राज्यों के कई प्रतिभागी जुड़कर इस संगोष्ठी को सफल बनाया। संगोष्ठी का आयोजन उद्घाटन सत्र सहित तीन सत्रों में आयोजित किया गया।

संरक्षक
प्रो. सुरेन्द्र दुबे

प्रधान संपादक
प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी

संपादक
डॉ. अपर्णा सारस्वत

संपादन सहयोग
अनिल तिवारी

टाइप सेटिंग
योगेन्द्र सिंह राणा

मुद्रक : एजुकेशनल स्टोर्स, गाजियाबाद (उ.प्र.)

संस्थान समाचार में प्रकाशित समाचारों का स्रोत केंद्रीय हिंदी संस्थान के विभिन्न विभागों/केंद्रों से प्राप्त सामग्री है। संस्थान समाचार के संबंध में अपनी प्रतिक्रिया और सुझाव संपादक के पास भेज सकते हैं। संस्थान समाचार का ई-मेल: sansthansamacharkhs2021@gmail.com

सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल आगरा-282005 द्वारा वितरण हेतु दिल्ली केंद्र से प्रकाशित।